तुम मुझ को कब तक रोकोगे ?

मुट्ठी में कुछ सपने लेकर,
भरकर मन में आशाएँ।
दिल में है अरमान यही,
कुछ कर जाएँ - कुछ कर जाएँ।
सूरज सा तेज नहीं मुझमें
दीपक सा जलता देखोगे।
अपनी हद रोशन करने से,
तुम मुझको कब तक रोकोगे।
मैं उस माटी की वृक्ष नहीं,
जिसको नदियों ने सींचा है
बंजर माटी में पलकर मैंने,
मृत्यु से जीवन खींचा है।
तानो के सारे में भी रहकर
सच कहने की आदत है।
तुम - मुझ को कब तक रोकोगे
तुम - मुझ को कब तक रोकोगे ?

आकृति गुप्ता
(बी.ए) दूसरा वर्ष